रात्रिक्लास 29.3.68 ओमशान्ति

तुम हो दो बाप के सिकीलधे बच्चे। सो भी बड़े–2 बाप के। एक निराकारी ,दूसरा साकारी। सिद्ध होता है तुम नई सृष्टि के मालिक बनने वाले हो। यह भी नई कहेंगे। यह तो बहुत ऊँची है। संगमयुग को (भी) ऊँच रखेंगे। उस पार लगने में बाकी थोड़ी देरी है। 5000 वर्ष पूरे हो गये हैं। बाकी 8–9 वर्ष हैं। इस हालत में बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। जिस बात का कब बुद्धि में खयाल भी नहीं था। बाप ने आकर तुम बच्चों को बधाईयां दी हैं। तुम्हारा राज्य नज़दीक है। बाप कहते हैं बच्चों तुम अभी अपना राज्य–भाग्य स्थापन कर रहे हो। 100% स(र्ट)न भी है। सिर्फ बाकी बात है कौन–सा पद प्राप्त होगा। नज़दीक चल कर देखेंगे क्या होगा। हीरे, जवाहर आदि के महल कैसे होंगे। क्या होगा।यह भी देखा है विमान भर कर कहां से सोना ले आवेंगे। मकान बनाने लिए ज़रूर कोई कारगोपलैन होगी जो भर कर ले आवेंगे। जिससे मकान बनावेंगे। तुम बच्चों को तो यही ख़्यालात रहती होगी। ऐसे नहीं समझना सागर से देवताएं थाली भरकर ले आवेंगे। वह तो अभी ज्ञान सागर से तुमको ज्ञान रत्न मिल रहे हैं। बाकी वह जवाहर तो खानियों से ले आवेंगे। कैसे होगा। बच्चे समझते हैं विजय तो होनी ही है। यह भी जो सर्विसएबुल बच्चे हैं उन्हों की खयालात में आवेगा। इनको रात–दिन ख़्याल होता है क्या होगा, खानियां कैसे भरतू होंगी। सोने की खानियां तो यहां भी हैं। बहुत सोना निकालते हैं। हीरे निकलते हैं। बहुत मेहनत से खोद कर निकालते हैं। रफ निकलती है। ऐसे कब ख़्यालात आगे नहीं आती थीं। अभी तुम्हारी राजधानी स्थान हो रही है। यह निश्चय है। पूछेंगे

29.3.68 2

क्या होता है, सोना, हीरे कहां से लाते हैं। नोट आदि की तो ज़रूरत ही नहीं। तुम ऐसा इम्तहान पढ़ रहे हो जिसका एवजा नई दुनियां में मिलती है। यह ही कह सकते हो जैसे कल्प पहले बनाया था महल आदि वैसे ही बनावेंगे। यह चिन्तन सर्विसएबुल बच्चों को ही चलती होगी।जो भी रिद्धि–सिद्धि वाले लोग हैं, जितना नज़दीक आते जावेंगे उन सभी की रिद्धियां–सिद्धियां उड़ती जावेंगी। बाप आते हैं इन रिद्धियों–सिद्धियों को खत्म करने। तुम बच्चे बलवान बनते जावेंगे। तो उन्हों की रिद्धि–सिद्धि थकती रहेगी। वह भी तो माया है। यह सभी रिद्धि–सिद्धि भक्तिमार्ग के हैं। तुम्हारा है योगबल। उनके आगे कुछ ठहर न सके। तुम्हारा बल बढ़ता जावेगा तो माया के बल खत्म होते जावेंगे। इस समय माया रिद्धि–सिद्धि आदि का अच्छा ही बल है। उनको ही रावण राज्य कहा जाता है। इस दुनियां में भल मनुष्य के पास करोड़ों पदमों हैं। तुम बच्चे जानते हो बाकी कितना समय यह चलेंगे। यह ख़्यालात होता है विलायत वालों का क्या होगा। सागर में डूब जावेगा। जल जावेगा। तुम्हारे हाथ में तो कोई चीज़ नहीं आवेगी। तुम्हारे लिए एवर न्यू होगा। काम लाई चीज़, छी–2 चीज़ तुम्हारे लिए नहीं होगी। तुम नये बन जाते हो ना। पांच तत्व भी शुद्ध हो जाते हैं। तो नई खानियों से नया सोना हीरे, जवाहर आदि निकलेंगे। कुछ; परन्तु होगा ज़रूर। तो अन्दर में खुशी भी रहती है ऐसे–2 अपनी टाइम का सफलता होती रहेगी। यह ख़्यालात उनके पास आते रहेंगे तो अच्छी सर्विस करते रहते होंगे। बाकी घर जाकर फिर आवेंगे पार्ट बजाने। आना–जाना तो होता ही रहता है। एक शरीर छोड़ कर जाना कोई बड़ी बात नहीं। सम्पूर्ण तो कोई बना नहीं है। सहन करना पड़ता है कुछ न कुछ। अभी यह ज्ञान मिलता है आत्माओं को। संस्कार भी आत्मा ले जाती है। वह संस्कार वाली आत्मा बड़े घर में गई समझ सकते हैं अच्छे घर में जाकर जन्म लिया होगा। आत्मा में ज्ञान होगा; परन्तु ऑरगन्स छोटा होन(ने) कारण बोल न सके। बड़े होंगे तो संस्कार इमर्ज होंगे। वह बच्चे भी सतोप्रधान सतोगुणी ही होंगे। सर्विसएबुल बच्चे ऊँच पद पाने वाले हैं। उन्हों के ज़रूर ऐसे–2 विचार चलते होंगे। सभी के नहीं चलेंगे; क्योंकि बुद्धि कहां न कहां भटकती है। न आंतरिक इतना खुशी में ही होंगे। खुशी में वह रहेंगे तो(जो) निश्चय बुद्धि और सर्विस करते रहेंगे। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सेन्टर्स भी सम्भाल रहे हैं। तो उन्हों को ऐसी–2

ख़्यालात आनी चाहिए। इनको भी आती है ना। तो बच्चों को भी ख़्याल आते होंगे। अमरपुरी के ख़्यालात में रहते होंगे। वह इस दुनियां के ख़्यालात में जास्ती न रहेंगे। यह अपनी अवस्था का अनुभव सुनाना चाहिए। बाबा अनुभव सुनाते हैं ना। ..... ऐसे–2 विचार आते हैं। डॉक्टर को ख़्यालात रहेगा ना यह करेंगे, यह करेंगे फिर यह आमदनी होगी। किनका अच्छी तरफ,किनका छी–2 तरफ बुद्धियोग जावेगा। तुम बच्चों को भविष्य नई दुनियां की ही खुशी है। यहां के मनुष्यों को बाहर की खुशी रहती है। तुम बच्चों को अलौकिक दिव्य खुशी। और कोई मनुष्य को यह खुशी नहीं होगी। और कोई तुम्हारे इस खुशी को नहीं जानते हैं।तुम ब्राह्मणों में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही जानते हैं। अपनी नब्ज़ देखनी है किस प्रकार की खुशी है। वहां की खुशी है या यहां की खुशी है। मुसाफिरी कर रहे हैं। कोई जल्दी ,कोई देरी से चलते हैं। तुमको अथाह खुशी रहनी चाहिए। स्कॉलरशिप लेने वाले की दिल भरी रहती है ना। बेहद के खुशी का नशा सिर्फ तुम ब्राह्मणों को ही है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को नमस्ते। नमस्ते।